श्री राणीसती मन्दिर :

दादी नाम से सुप्रसिद्ध सुविख्यात झुंझुनू स्थित श्री राणीसती मन्दिर जो कि बंसल गोत्र की कुल देवी है, इनके द्वारा सभी शुभ कार्यों के समय विशेष पूजा अर्चना की जाती है। दादी के दरबार में लाखों भक्तजन दूर–दूर से मनौती मांगने वर्ष भर आते रहते हैं।

कहा जाता है कि सेठ जालीराम जी हिसार राज के नवाब चन्द जी के दीवान थे। इनके छोटे पुत्र तनधनदास जी का शुभविवाह नारायणी देवी के साथ हुआ था। तनधनदास जी के पास एक सुन्दर आकर्षक व सुलक्षण घोड़ी थी जिस पर नवाब के शहजादे की आँखें थी। तनधनदास जी से घोड़ी मांगने पर शहजादे को उन्होंने मना कर दिया था।

एक रात शहजादा चोरी की नीयत से घोड़ी चुराने गया तो जाग होने पर तनधनदास जी के भाले से मारा गया। तबसे नवाब बदले की आग में जलने लगा तथा वैमनस्य बढ़ गया जब तनधनदास जी अपनी पत्नी नारायणी देवी को लेकर ससुराल से लौट रहे थे तो नवाब सडचन्द के सैनिकों ने उन पर धावा बोल दिया। इस संघर्ष में वीर तनधनदास जी युद्ध में वीरगति पा गये। इस पर नारायणी देवी ने रण में अपना कौशल दिखाते हुए दुश्मनों का सफाया कर दिया तथा पति के शव के साथ सती हो गयी।

इनका सेवक राणा घोड़ी पर भस्मी लेकर जब झुंझुनूं पहुंचा तो घोड़ी यहां रूक गयी इसी स्थान पर नारायणी सती का मंडप बनवाया गया जो आज विशाल भवन का रूप ले चुका है। यहाँ वर्ष में दो बार मेले लगते हैं एक दादी के मंगसर बदी नवमी जन्म दिवस पर दूसरा सती होने की तिथि भादवा बदी अमावस्या पर।